**कोलाम जनजाति में संरचनात्मक रूपांतरण व 'कुमारी माता'**

**(A Structural Transformation in Kolam Tribe and "*Kumari Mata")***

A gender anthropological study

## भूमिका

1.1.साहित्य पुनरावलोकन

1.2.शोध क्षेत्र

1.3.शोध प्राविधि

1.4.शोध प्रश्न

1.5.शोध उद्देश्य

1.6.अध्याय विभाजन

1.7.शोध की सीमाएं

1.8.क्षेत्र अनुभव (आत्मभिज्ञान)

**भूमिका-**

महाराष्ट्र का यवतमाल जिला आदिवासी बाहुल्य इलाका है। यवतमाल जिले का एक हिस्सा आंध्र प्रदेश के अदीलाबाद जिले की सीमा को छूता है। यवतमाल के झरी-जामनी व मारेगांव तालुका में गोण्ड, परधान और कोलाम आदिवासी लगभग 60% से 70% हैं। परंतु इस इलाक़े की अधिकांश ज़मीनें रेड्डी, ब्राह्मण, तेली, मराठा, बंजारा जैसे गैर आदिवासी समुदाय के पास हैं। आदिवासी समुदायों के पास जमीने न के बराबर अथवा बंजर हैं, जहाँ पर केवल बारिश के समय ही खेती संभव है। कई इलाकों में कोलाम समुदाय के पास पांच से सात एकड़ जमीन है लेकिन अत्यधिक गरीबी के कारण खेती करना उनके लिए महंगा पड़ता है। जिसके कारण जमीन के बहुत ही कम हिस्से पर वो खेती करते हैं अथवा अपनी जमीन को दूसरे समुदाय के लोगों को खेती करने के लिए दे देते हैं, जिसके बदले में रूपये लेते हैं। यहाँ अधिकतर आदिवासी मजदूरी और खेतिहर मजदूरी का कार्य अपनी जीविका के लिए करते हैं। आदिवासी समाजों में जीविका के लिए श्रम, स्त्री और पुरुष दोनों ही करते हैं। घर के बाहर जाकर मजदूरी या श्रम करना महिलाओं के लिए भी उतना ही सहज है जितना पुरुषों के लिए। कोलाम समुदाय में अत्यधिक गरीबी के कारण परिवार का हर सदस्य आजीविका के लिए मजदूरी करता है। अधिकतर लोग कृषि मजदूरी ही करते हैं परन्तु ये काम भी न मिल पाने पर अपने गाँव से बाहर किसी भी तरह की मजदूरी करते हैं। कोलाम महिलाएं भी आजीविका के लिए कृषि मजदूरी अथवा मजदूरी करती हैं।

झरी-जामनी में कुमारी माता बनने की घटनाएँ पिछले कुछ वर्षों से प्रकाश में आ रही हैं। यहाँ पर प्रशासन व मीडिया के द्वारा 'कुमारी माता' शब्द का प्रयोग उन महिलाओं के लिए किया गया, जो बिना विवाह किये ही गर्भ धारण करती हैं अथवा बिना विवाह किये ही बच्चों

को जन्म देती हैं । पुष्पेश कुमार ने अपने अध्ययन में कहा है कि कोलाम समुदाय में महिलाओं के सम्बन्ध में यौन शुचिता को लेकर किसी किस्म का पूर्वाग्रह लगभग नहीं दिखाई पड़ता है और बच्चों को समुदाय की धरोहर माना जाता है। एक पितृवंशात्मक समुदाय होने के नाते प्रतीक के रूप में पितृसत्ता के लक्षण दिखाई देते है वह भी मुख्य रूप से विवाह या अन्य समारोह में दिखाई देता है।[1] कोलाम समुदाय में परिवार के भीतर अन्य समाजों की तुलना में, स्त्री-पुरुष संबंधों में थोड़ी समानता जरुर होती है जैसे विवाह का फैसला लड़की की पसंद व नापसंद पर भी टिका रहता है। परिवार में आजीविका के लिए स्त्री भी पुरुष के बराबर ही श्रम करती है, इसलिए घर के फैसलों में उसकी भी अहम भूमिका रहती है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इस समुदाय में कुमारी माता परिघटना का जन्म कैसे हो रहा है? यौन शुचिता को लेकर कोलाम समुदाय में कोई पूर्वाग्रह नहीं है तो विवाह-पूर्व संबंध बनने पर लड़कियों का विवाह मुश्किल क्यों होता जा रहा है? या ऐसी लड़कियां जिनके संबंध विवाह-पूर्व बन रहे हैं, उनको ख़राब दृष्टी से क्यों देखा जा रहा है?

पिछले कुछ वर्षों में आदिवासी समाज का गैर आदिवासी समाज से संपर्क व निर्भरता बढ़ी है। यह इसलिए भी संभव हो पाया है क्योंकि जंगल तक बिना रोक-टोक के आदिवासियों की पहुँच थी और उसके सहारे ही उनकी जीविका चल जाया करती थी। इससे सरकार ने उन्हें वंचित कर दिया। पिछले कुछ वर्षों में यातायात की सुगमता के चलते इन आदिवासियों को अपनी जीविका चलाने के लिए बाहर निकलने पर मजबूर किया। आदिवासी महिलाओं का रोज़गार एवं जीविका के लिए बाहर निकलना, निम्न आर्थिक पृष्ठभूमि होने के चलते गैर आदिवासी समाज के द्वारा उनके श्रम व शरीर के शोषण ने भी इस इलाके में कुमारी माता नामक परिघटना को जन्म दिया है। गैर आदिवासी समाजों में प्रचलित मूल्यों के अनुसार वे महिलाएं जो बिना विवाह किये गर्भ धारण करती हैं, को हेय दृष्टी से देखा

[1](kumar, 2000)

जाता है। ठीक इन्ही मूल्यों को अब इन आदिवासियों ने भी आत्मसात कर लिया है, जिसके चलते यौन शुद्धता जैसी बिलकुल नयी अवधारणा हमें इन समाजों में भी दिखाई पड़ रही है। कोलाम जनजाति अन्य जनजातियों की तुलना में आर्थिक रूप से ज्यादा कमजोर है इसलिए कुमारी माता नामक समस्या सबसे ज्यादा कोलामों में ही दिखाई पड़ रही है। हिन्दूकरण की इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में हिन्दू संगठनों के साथ-साथ राज्य की भी बड़ी भूमिका है। कोलाम आदिवासी, टेलीवीजन के साथ, जनसंचार के अन्य माध्यमों से भी हिन्दू धर्म के आचार-विचार को अपना रहे हैं। प्रत्येक गाँव जहाँ केवल जनजाति समुदाय ही रहता था, अब वहां हिन्दू धर्म को मानने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है। इसके साथ  लगभग हर गाँव में मंदिर का निर्माण हो गया है। अधिकतर मंदिर गाँव के बीचों-बीच में बनाये जाते हैं व हर हिन्दू त्यौहारों को बहुत भव्यता के साथ मनाया जाता है। हिन्दू देवी-देवताओं को कुछ इस तरह से महिमामंडित किया जाता है कि जनजातीय समुदाय उन्हें अपने देवी-देवताओं से अधिक शक्तिशाली मानने लगते हैं और उनकी पूजा करते हैं। धीरे-धीरे वे इन त्यौहारों के सभी रीती-रिवाजों को आत्मसात कर लेते हैं व एक लम्बी प्रक्रिया के बाद ये अपने आपको चेतना के स्तर पर हिन्दू मानने लगते हैं।

कोलाम जनजाति एक समुदाय होने के साथ-साथ 'विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूह'(PVTG) में भी शामिल है। इसलिए कोलाम समुदाय की सामाजिक संरचना को समझते हुए, समुदाय के भीतर हो रहे परिवर्तनों को समझना बहुत जरुरी हो जाता है। इस बदलते हुए स्वरूप में स्त्रियों की स्थिति क्या है और उनकी स्थिति में किस तरह का परिवर्तन हो रहा है, यह जानना बेहद प्रासंगिक हो जाता है। कोलाम जनजाति में कुमारी माता की परिघटना को समझते हुए समुदाय में हो रहे परिवर्तनों के साथ इनके बीच बन रहे, नए सत्ता-संबंधों की पड़ताल आवश्यक है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने आदिवासी समुदाय को प्रभावित किया है, जिसके चलते आदिवासी समुदाय में नित नए-नए बदलाव देखने को मिल

रहे हैं। इसके अलावा आदिवासी समाज में हो रहे बदलाव को समझने के लिए संस्कृतिकरण को जनजातीय सन्दर्भ में समझना आवश्यक होता है। संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रकिया है जिसमें कोई छोटी जाति अपने से ऊँची जाति के आचरण व मूल्यों को अपनाने का प्रयास करती है या कोई जाति स्थानीय प्रभु जातियों के आचरणों को अपनाने का प्रयत्न करती है। संस्कृतिकरण की इस प्रक्रिया को आदिवासी समुदाय में घटित होने के लिए यह आवश्यक है कि वह पहले अपने आपको किसी जातीय संरचना में देखना प्रारम्भ करे। इसके लिए आदिवासी समुदाय का खुद को किसी जातीय संरचना में रखने के लिए पहले हिन्दूकरण की प्रक्रिया में आना आवश्यक हो जाता है। वर्जिनियस खाखा अपने अध्ययन में कहते हैं कि आदिवासी समुदाय में संस्कृतिकरण अथवा हिन्दूकरण की प्रक्रिया शुरू होने के लिए जातीय आधार ही काफी है। ऐसा हो नहीं सकता कि आदिवासी समुदाय में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया भी हो और वे जातीय संरचना से बाहर भी रहें[2]। जातीय संरचना में आने तक उनमें हिन्दूकरण की प्रक्रिया निरंतरता से चलती रहती है। परन्तु जातीय संरचना में शामिल होने से पूर्व वह अपने स्थानीय प्रभु जातियों के सांस्कृतिक तत्व, मूल्य, विचार, रीति-रिवाज़ आदि से प्रभावित होते हैं और अपने समुदाय व जीवन में उनका अनुसरण करते हैं।

किसी भी समुदाय की सामाजिक संरचना का मुख्य आधार समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था होती है। सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत परिवार, विवाह, नातेदारी, स्त्री-पुरुष संबंध आदि होते हैं। सांस्कृतिक व्यवस्था के अंतर्गत भाषा, रहन-सहन, वेष-भूषा, कला, धर्म, आचार-विचार आदि को आधार मानते हैं, जबकि आर्थिक व्यवस्था के अंतर्गत जीविका के साधन, श्रम का विभाजन, उत्तराधिकार आदि होते हैं।

[2]Virginius Xaxa "Transformation of Tribes in India Terms of Discourse"

## 1.1 साहित्य पुनरावलोकन

कोलाम जनजाति का अध्ययन एक समुदाय के रूप में करते हुए, उनकी सामाजिक संरचना में किस तरह के बदलाव हो रहे हैं और उसका प्रभाव किस रूप में दिखाई दे रहा है? कोलाम जनजाति में जेंडर असमानता की पड़ताल करते हुए 'कुमारी माता' की परिघटना को समझना होगा।

शोध से सम्बंधित साहित्य पुनरावलोकन प्रमुख तीन भागों में विभाजित है-

(अ) कोलाम जनजाति का एक समुदाय के रूप में अध्ययन से सम्बंधित साहित्य पुनरावलोकन।

(ब) भारतीय जनजाति समूह और कोलाम की सामाजिक संरचना में रूपांतरण से सम्बंधित विषयों के अध्ययन का साहित्य पुनरावलोकन।

(स) जनजाति समूह व कोलाम में जेंडर सम्बंधित अध्ययन व कुमारी माता से संबंधित अध्ययन का साहित्य पुनरावलोकन।

### (अ) कोलाम जनजाति का एक समुदाय के रूप में अध्ययन से सम्बंधित साहित्य पुनरावलोकन।

**एसजी देवगंकर व लीना देवगंकर** द्वारा पुस्तक '**The Kolam tribe'** एक मानववैज्ञानिक एथनोग्राफिक अध्ययन है जिसमें, कोलाम जनजाति के बारे में विस्तृत जानकारी है। कोलाम जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक संस्थाओं की विस्तृत चर्चा है और कोलाम लोक गीतों पर एक पूरा अध्याय है। जिसमें कोलामी बोली के नंबर, जानवर, पेड़, रंग, शरीर के अंगों का नाम, नातेदारी, व चिड़ियों के नामों को अंग्रेजी में लिखा गया है जो कि महत्वपूर्ण काम है परन्तु प्रस्तुत पुस्तक में कोलाम समाज में हिन्दू समुदाय के

प्रभाव पर कोई चर्चा नहीं की गई हैं साथ ही कोलाम महिलाओं की स्थिति की अनदेखी की गई है।

**डी. हाजरा की पुस्तक 'the kolam of yaotmal'** एक एथनोंग्रफिक अध्ययन है। जो कोलाम जनजाति कि आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक-संरचना, जीवन-चक्र, रीति-रिवाज, राजनैतिक-व्यवस्था, धार्मिक-विश्वास, त्यौहार आदि के बारे में विस्तृत अध्ययन है। डी.हाजरा का काम कोलाम जनजाति पर किया गया पहला अध्ययन था, जिसमें कोलाम महिलाओं की उपेक्षा की गई है, साथ इस अध्ययन में किसी भी तरह से महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश नहीं डाला गया है। हाजरा ने कोलाम महिलाओं की कृषि में भूमिका को भी पुरुषों से निम्नतर ही माना है। लेकिन इस किताब से कोलाम समुदाय पर एक बेहतर समझ बनाई जा सकती है क्योंकि यह विशुद्ध रूप से नृजातीय अध्ययन है।

**M.B.Emeneau की पुस्तक 'Kolam, a Dravidian Language'** में कोलामी बोली को द्रविडियन भाषा की उत्पति मानते हुए, कोलामी बोली का अध्ययन किया गया है। कोलामी बोली में तमिल व मराठी भाषा के शब्दों का गहन अध्ययन व्याकरण के आधार पर किया गया है परन्तु कोलामी बोली में तेलगु से लिए शब्दों पर ज्यादा ध्यान आकर्षित किया गया है।

**Renuka Patnayak** द्वारा लिखित पुस्तक '**Tribe-Ecology and development**' में महाराष्ट्र के जनजातीय समाज की पारिस्थितिकी व विकास पर गहन चर्चा करते हुए एक अध्याय में कोलाम समुदाय की आर्थिक परिस्थितियों पर गहन चर्चा की गयी है। जिसमें उन्होंने यह बात मुख्य रूप से कही है कि कोलाम समुदाय जीविका के अपने पारम्परिक साधनों से वंचित हो गया, जिसमें जंगल पर निर्भरता, शिकार, झूम खेती आदि थे और उन्हें अपनी जीविका के लिए मजदूर या कृषि मजदूर बनना पड़ा है।

**M.N. Vahia, Ganesh Halkare, Kishore Menon, Harini Calamur** के द्वारा लिखित लेख '**The Astronomy of Two Indian Tribes: The Banajaras and the Kolams**' में बंजारा, कोलाम और गोंड समुदाय में खगोलविज्ञान के स्वरूप का वर्णन किया गया है। तीनो समुदायों का यह खगोलीय विवरण बहुत ही रोचक भी है। लेखक यह कहते हैं कि इन समुदायों में सामुदायिक भावना व अपने समुदाय के अस्तित्व की भावना इतनी प्रबल है कि इनकी अपनी-अपनी पौराणिक मान्यताएं व कहानियां हैं। खगोलविज्ञान से संबंधित विचार व विश्वास सीधे उस काल से जुड़े हैं, जबसे वे स्थाई जीवन जीना प्रारंभ करते हैं। आसमान और तारों को देखकर किस तरह यह तीनों समुदाय मौसम का अंदाज़ा लगाते हैं और उससे संबंधित मान्यताएं व कहाँनियाँ क्या हैं इसका विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत लेख में लेखक ये मानते हैं कि कोलाम जनजाति को 'कोलावर' भी कहते हैं।

**(ब) भारतीय जनजाति समूह और कोलामों की सामाजिक संरचना में रूपांतरण से सम्बंधित विषयों के अध्ययन का साहित्य पुनरवलोकन।**

**K.Mohan Rao** की पुस्तक '**The Kolams: a primitive tribe in transition**' आदिलाबाद के कोलामों पर नब्बे के दशक में किया गया अध्ययन है। इस पुस्तक में मुख्यतः कोलाम जनजाति का परिचय के साथ-साथ उनके पड़ोस में रहने वाले अन्य समुदायों का भी परिचय देते हुए कोलाम समाज में आ रहे आर्थिक व सांस्कृतिक बदलाव को रेखांकित किया गया है। मोहन राव ने परिचय में कहा है कि कोलाम आदिम अवस्था को छोड़ते हुए स्थाई कृषि की तरफ बढ़ रहें हैं परन्तु इस क्रांतिकारी परिवर्तन से उनके सांस्कृतिक क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इनके अनुसार कोलामों के बारह त्यौहारों में से केवल 'दीपावली' को ही हिन्दुओं के प्रभाव में आने के चलते मनाया जाता है और अधिकांश कोलाम 'संस्कृतिकरण' के प्रभाव में नहीं हैं। कोलामों के धार्मिक जीवन में अभी

तक हिन्दुवाद का प्रवेश नहीं हो पाया है। जबकि मोहन राव ने सारांश में इस बात को स्पष्ट किया है कि कोलाम हिन्दुवाद के प्रभाव में आकर ही 'भीमसेन' और 'एदुमला' की पूजा कर रहे हैं।

**एम.एन. श्रीनिवास** की पुस्तक '**आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन**' संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण को व्याख्यायित करने के लिए लिखी गई है। जातियों में पश्चिमीकरण के कारण गतिशीलता व संस्कृतिकरण के माध्यम से सामाजिक सोपान में संरचनात्मक परिवर्तन नहीं, बल्कि पदमूलक परिवर्तन होते हैं। श्रीनिवास के द्वारा दी गयी यह अवधारणा संस्कृतिकरण का परिमार्जित रूप है। पहले उन्होंने संस्कृतिकरण के लिए आदर्श जाति ब्राहमण को माना था, लेकिन बाद में उन्होंने इसमें सुधार करते हुए कहा कि संस्कृतिकरण के लिए आदर्श जाति स्थानीय प्रभु जातियां भी होती हैं, जिनका अनुसरण छोटी जातियां करती हैं। इसी पुस्तक में उन्होंने अपसंस्कृतिकरण (desanskritization) की भी अवधारणा रखी है जो कि महत्वपूर्ण योगदान है परन्तु संस्कृतिकरण की अवधारणा को जनजातियों में तब तक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, जब तक कि खुद जनजातियाँ अपने आप को किसी जाति के स्तर पर नहीं रखती हैं।

**VIRGINIUS XAXA** का लेख '**Politics of Language, Religion and Identity: Tribes in India'** इस बात को स्पष्ट करता है कि आदिवासी (tribe) शब्द का वर्णन औपनिवेशिक काल की घटना है उससे पहले आदिवासी समूह के वर्णन का कोई भी दस्तावेज अनुपस्थित है। औपनिवेशिक काल में ही आदिवासियों के लिए यह अवधारणा बनी कि वह मुख्यधारा की सभ्यता से अलग है। जोसफ़ बारा इसमें यह बात जोड़ते हैं कि 16 वीं शताब्दी में आदिवासियों को आदिम व बर्बर समुदाय से संबंधित कहा गया है। ठीक ऐसा ही चित्रण हिन्दू धर्म ग्रंथों में भी किया गया है और इस धारणा को और मजबूत करते हुए आदिवासियों को दस्यु, दैत्य, राक्षस और निषाद कहा गया। खाखा यहाँ यह विमर्श रखते हैं

कि सामाजिक मानवविज्ञानी घुर्ये ने आदिवासियों का हिन्दुओं की तरह वर्णन करते हुए उन्हें 'पिछड़े हुए हिन्दू' कहा था और यह अवधारणा बाद में भारत में आदिवासियों के बारे में सोचने की व राय बनाने की लाइन बन गई। आगे चलकर देश की दक्षिणपंथी राजनीति ने इस सोच का बहुत उपयोग व इस्तेमाल किया।

**Virginius Xaxa** अपने विमर्श में यह कहते हैं कि अगर आदिवासियों के प्राकृतिक धर्म को हिन्दू धर्म के साथ पूजा पद्धतियों के आधार पर जोड़ा जा रहा है और इसी आधार पर उन्हें पिछड़े हिन्दू कहा जा रहा है तो फिर यही पद्धतियाँ अमेरिका व अफ्रीका के आदिवासियों से भी मिलती जुलती हैं क्या उन्हें भी हिन्दू धर्म से जोड़ा जायेगा? खाखा यह बात कहते हैं कि सिर्फ धर्म के आधार पर ही समानता को नहीं देखना चाहिए बल्कि विचार, भाषा, स्थानीयता और विश्वास को भी आधार बनाना चाहिए। आदिवासी धर्म और हिन्दू धर्म के विचार व विश्वास किसी भी आधार पर एक जैसे नहीं हैं।

**Virginius Xaxa** द्वारा लिखित लेख '**Transformation of Tribes in India: Terms of Discourse'** में यह बात कहते हैं कि भारतीय समाज में 400 के लगभग जनजातीय समूह हैं और लगभग सभी समूह परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। अपने इस लेख में **Xaxa** ने 'जाति व जनजाति', जनजातीय समूह को जातीय आधार पर देखना', 'संस्कृतिकरण', 'हिन्दूकरण', 'भाषा', 'जनजाति व किसान', 'सामाजिक अंतर', 'जनजाति समूह के लिए गलत समझ का आधार' और 'जनजाति एक समुदाय' पर विस्तृत चर्चा की है।

**K.S.Singh** का लेख '**Transformation of Tribal Society Integration vs Assimilation**' जनजातीय समाज की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिदृश्यों की पड़ताल करती है। जनजातीय समाज में बदलाव के अलग-अलग प्रारूप क्या हैं और सामाजिक स्तरीकरण का इन पर क्या व कैसे प्रभाव पड़ा है। इस पर विस्तृत चर्चा है। सिंह इस

बात की चर्चा करते हैं कि जनजाति को वर्णित करने के पुराने तरीके में उन्हें अलगाव, एकरूपता व अपने स्थानों में ठीक से अवस्थित माना जाता था, जबकि नए परिदृश्य में (खासकर प्रशासन के दबाव में) उन्हें आदिम, आर्थिक रूप से पिछड़े और जिनका विकास किया जाना है के सन्दर्भ में देखा गया है।

**(स) कोलाम जनजाति में जेंडर सम्बंधित अध्ययन व कुमारी माता से संबंधित अध्ययन का साहित्य पुनरावलोकन।**

**Pushpesh kumar** का लेख **'Gender and procreative ideologies among the Kolam of Maharashtra'** 2006 में प्रकाशित हुआ था। यह अध्ययन महाराष्ट्र में नांदेड जिले के किनवट तहसील के जवारला गाँव के कोलाम जनजाति पर आधारित है। अपने इस अध्ययन में कुमार, चंद्रपुर के कोलाम, यवतमाल और आदिलाबाद के कोलाम में अंतर प्रस्तुत करते हैं। नांदेड जिले के कोलामों की नातेदारी व्यवस्था की बात करते हुए 'खून और दूध' की अवधारणा पर बात करते हैं जिसका पूर्व विचार लीला दुबे 'बीज व खेत' के रूप में कर चुकी हैं। कुमार एक महत्वपूर्ण बात यह कहते हैं कि खून और दूध की मान्यता केवल विवाह की रस्मों के दौरान ही दिखाई देती है। इसका वास्तविक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। एक स्त्री और पुरुष जिनके बच्चें हैं। वो एक दूसरे से अलग हो सकते हैं। दोनों ही दूसरा विवाह कर सकते हैं। परन्तु बच्चे किसी के भी पास रह सकते हैं। नहीं तो माता या पिता के संबंधी बच्चों की जिम्मेदारी लेते हैं, क्योकि बच्चे समुदाय की धरोहर के रूप में माने जाते हैं। कोई स्त्री चाहे तो दूसरा विवाह कर सकती है या नहीं। यह पूर्णतः उस स्त्री पर ही निर्भर करता है। उस पर सामाजिक या पारिवारिक किसी भी तरह का कोई दबाव नहीं होता है। खून की अवधारणा एक तरह से पितृसत्ता को प्रदर्शित करती है। चूँकि कोलाम समुदाय पितृस्थानीय समाज है और दूसरे विवाह के उपरांत स्त्री का अपने बच्चों पर अधिकार नहीं रहता है। इससे संबंधित विवाद कोलाम समुदाय की चावड़ी पर नाईक व महाजन के

माध्यम से हल किये जाते हैं। पिछले 50-60 वर्षों में कोलाम समुदाय के पास कुछ जमीने सरकार के माध्यम से आई हैं जिसमें लड़कियों की कोई भी हिस्सेदारी नहीं होती है।

**कोलाम जनजाति में पर-संस्कृतिकरण और 'कुमारी माता' – एक मानवशास्त्रीय अध्ययन** नामक अध्ययन जो कि अप्रकाशित है। **गुंजन सिंह** द्वारा 2014 में एम.ए. के लघु-शोध के रूप में किया गया है। इस अध्ययन में नौ कुमारी माताओं का साक्षात्कार लिया गया है व पर-संस्कृतिकरण के सिद्धांत को अपनाते हुए कोलाम समाज में हो रहे बदलावों को समझने की कोशिश की गयी है। इस पूरे शोध में हिन्दूकरण के प्रभाव की जबरदस्त अनदेखी की गई है। परन्तु मेरा शोध **कोलाम जनजाति में संरचनात्मक रूपांतरण व 'कुमारी माता'** इस शोध का ही विस्तार है, इसलिये एम.ए. के दौरान मेरे द्वारा किये गए शोध से महत्वपूर्ण फोटो व सामग्री का उपयोग इस शोध में भी किया गया है।

**डॉ सुनीता शर्मा व अमरेन्द्र किशोर की** पुस्तक '**ये अनब्याही माताएँ**' उन महिलाओं पर आधारित है जो यौन शोषण व धोखे का शिकार हुई हैं और अपने जीविकोपार्जन के लिए संघर्षरत हैं। यह कहानी उन आदिवासी महिलाओं की है, जिन्हें आसानी से यौन शोषण का शिकार बनाया गया। यह विवरण उड़ीसा राज्य पर केन्द्रित है, जिसमें एक समूह के द्वारा साक्षात्कार किये गए हैं और सैम्पलिंग के लिए स्नोबाल विधि के साथ-साथ वहां के गैर सरकारी संगठनों (NGO) की मदद ली गई है। परन्तु इस पुस्तक में किसी भी तरह से सामाजिक संरचना, संरचनात्मक रूपांतरण, आर्थिक व राजनैतिक पहलुओ पर विचार नहीं किया गया है न ही आदिवासी समाजों का दूसरे समाज के साथ संपर्क से आने वाले बदलावों पर बात की गई है।

**अनुजा अग्रवाल** द्वारा पुस्तक '**chaste wives and prostitute sisters: patriarchy and prostitution among the Bedias of India**' एक

मानववैज्ञानिक अध्ययन है। जिसमें मध्य प्रदेश की बेड़िया जनजाति में वेश्यावृति व अपराध पर विस्तृत अध्ययन है। इस पुस्तक की शोध प्रविधि महत्वपूर्ण है व यह अध्ययन एक तरह का एथनोंग्राफिकल अध्ययन है।

**नीता लोधा** द्वारा पुस्तक '**status of tribal women**' राजस्थान के आदिवासी महिलाओं की स्थिति और सामाजिक स्तर पर किया गया अध्ययन है। नीता लोधा ने महिलाओं की स्थिति के आंकलन के लिए कुछ सूचक बनाये हैं जैसे जनसँख्या, लिंगानुपात, साक्षरता, काम में भागीदारी, मातृत्व व्यवहार, जीवन प्रत्याशा, विवाह की उम्र आदि। इस पुस्तक में महिलाओं के साथ किसी भी तरह के यौन शोषण की चर्चा नहीं की गई है परन्तु दूसरा अध्याय 'साहित्य पुनरावलोकन' बहुत महत्वपूर्ण अध्याय है जिसमें साहित्य पुनरावलोकन कैसे किया जाये कि जानकारी हमें मिलती है। जो मेरे शोध के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

**डॉ अरुण कुमारी सिंह द्वारा** पुस्तक '**जनजातीय समाज में स्त्रियाँ**' एक मानववैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें कुचबंदिया जनजाति में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया गया है। कुचबंदियाँ जनजाति परिवर्तन व संस्कृतिकरण के कारण जाति व्यवस्था में शामिल हो गयीं है, जिसे घुर्ये 'पिछड़े हिन्दू' कहते हैं। कुचबंदियाँ खुद को अब राजपूतों की उत्पत्ति बताते हैं। संस्कृतिकरण व हिन्दूकरण के कारण महिलाओं पर पड़ रहे प्रभावों का अध्ययन किया गया है। परन्तु किसी जनजाति का दूसरे समाज से संपर्क के कारण महिलाओं के साथ यौन शोषण का कोई अध्ययन नहीं किया गया है।

**सरिता सहाय** द्वारा लिखित पुस्तक '**tribal women in the new profile**' एक मानववैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन है जिसमें रांची के आदिवासी व गैर आदिवासी महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें आय के लिए काम करने वाली

महिलाओं का अध्ययन है साथ ही दूसरे समाज के साथ संपर्क के कारण पितृसत्ता के स्वरूप की भी चर्चा की गई है।

संस्कृतिकरण की परिभाषा जातियों के लिए उपयुक्त है परन्तु जनजातियों के संदर्भ में इसके साथ हिन्दूकरण का सिद्धांत अधिक उपयुक्त है, जिसे जनजातीय सन्दर्भ में संस्कृतिकरण के एक कदम पीछे का स्तर माना जा सकता है। जिसमें जनजातीय समाज अपनी मान्यताओं के साथ ही संपर्क समुदाय की मान्यताओं को अपनाता है। अधिकतर जनजातियों का संपर्क हिन्दू समुदाय से है इसलिए हिन्दू मान्यताओं का प्रभाव इन पर ज्यादा रहा है।

उपरोक्त पुस्तकों में कोलाम जनजाति में हिन्दू मान्यताओं का प्रभाव व महिलाओं पर प्रभाव को नहीं दर्शाया गया है जो कि मेरे शोध का केंद्र बिंदु है।

## 1.2 अध्ययन क्षेत्र

महाराष्ट्र  भारत का एक राज्य है, जो भारत के दक्षिण मध्य में स्थित है। इसकी गिनती भारत के सबसे धनी राज्यों में की जाती है। इसकी राजधानी मुंबई है, जो भारत का सबसे बड़ा शहर है और देश की आर्थिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है।

यवतमाल, महाराष्ट्र राज्य के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा शहर है। समुद्र सतह से लगभग 1460 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह शहर विदर्भ क्षेत्र में आता है और चंद्रपुर, वर्धा, वाशिम, हिंगोली, नांदेड़, अमरावती और आन्ध्र प्रदेश के अदिलाबाद जिलों से घिरा हुआ है। यवतमाल का नाम यवत और माल से मिलकर बना है, जहाँ मराठी में यवत का अर्थ पर्वत और माल का अर्थ लाइन या पंक्ति है। यवतमाल जिले में कुल 14 तालुके (बाभूलगांव, कंवल, रालेगांव, नेर, दारव्हा, दिग्रस, पुसद, महागांव, उमरखेड़, आर्वी, घाटनजी, केलापुर, मारेगांव, झरी-जामनी और वणी) हैं।

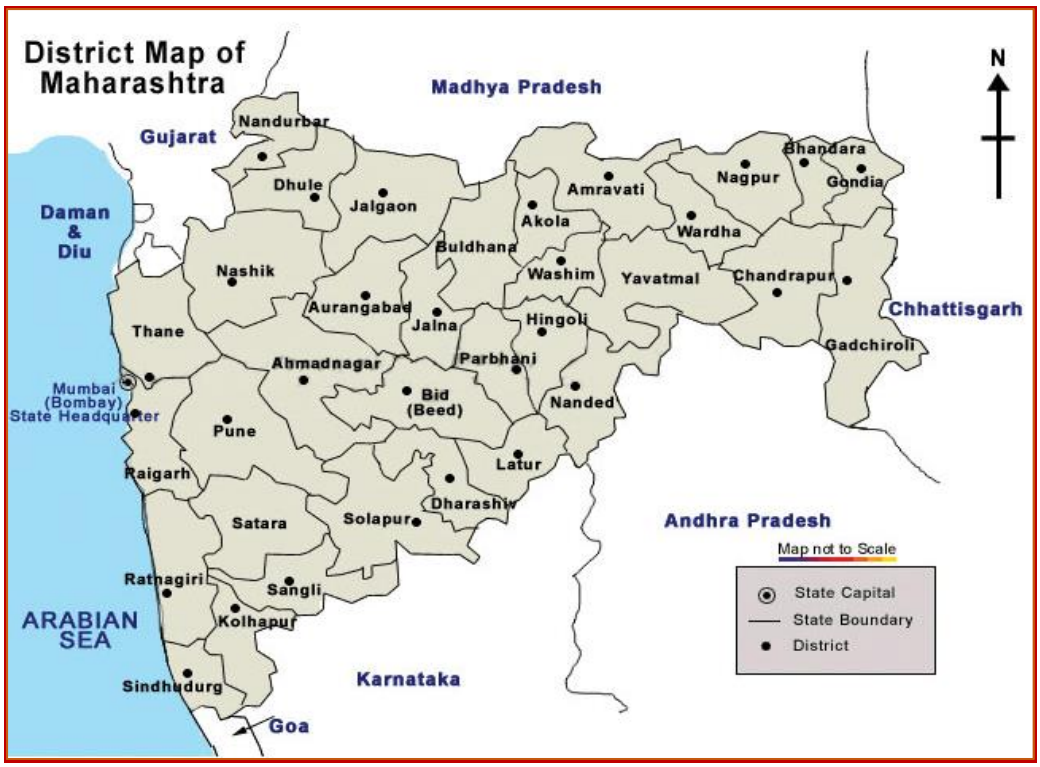


*Figure 1महाराष्ट्र का मानचित्र*

यह अध्ययन यवतमाल जिले के झरी-जामनी तालुका में रहने वाले कोलाम आदिवासियों पर केंद्रित है। झरी-जामनी को 1997 में तालुका का दर्जा प्राप्त हुआ है। जिसमें 56 ग्राम पंचायत एवं 122 गाँव हैं। पूरे झरी-जामनी तालुके में केवल एक डिग्री कॉलेज है। मारेगांव तालुका में भी 56 ग्राम पंचायत हैं, जिसमें 97 गाँव हैं।

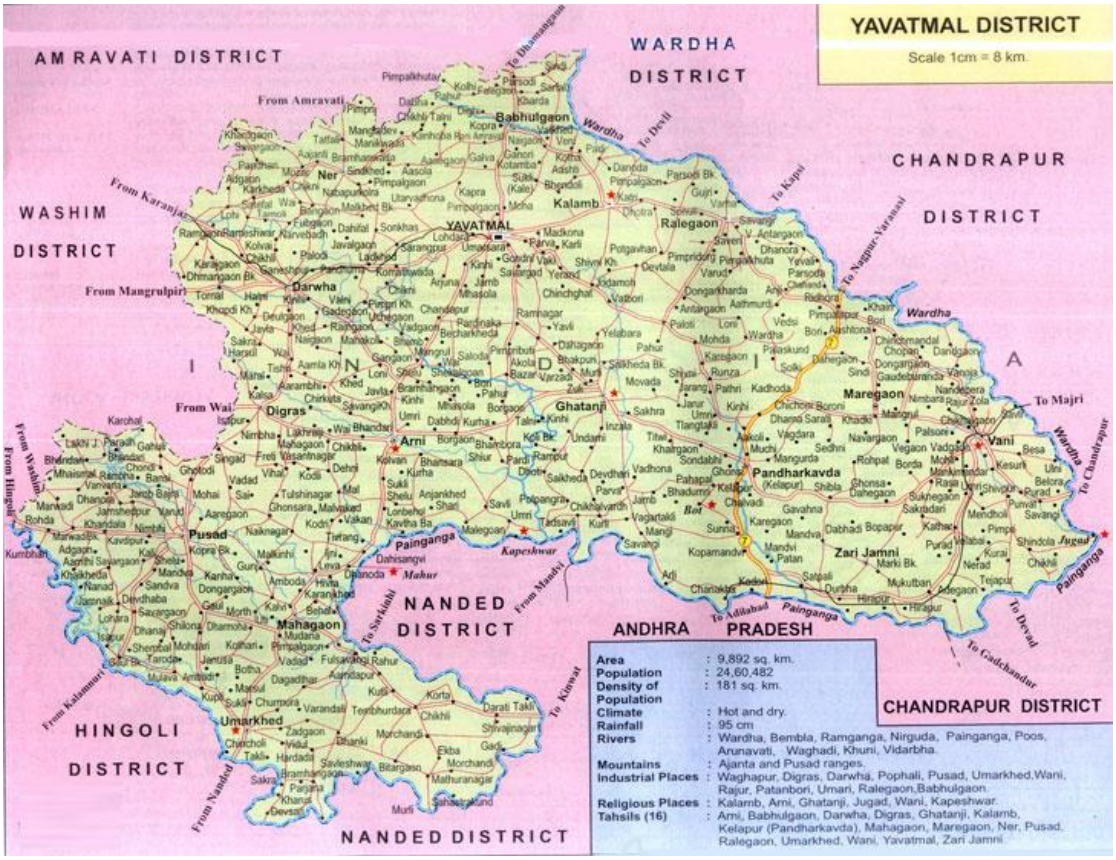


*Figure 2 यवतमाल का मानचित्र*

महाराष्ट्र में मुख्य रूप से तीन 'विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूह' (PVTG) हैं, जो कि कटकरी, कोलाम व मारिया गोण्ड हैं, जिनकी जनसंख्या 2001 में 4,08,668 थी। कोलाम आदिवासी मुख्य रूप से यवतमाल, चंद्रपुर व अदिलाबाद जिले में निवास करते हैं। इसमें से कोलाम आदिवासियों की जनसंख्या 2001 में 1,73,646 थी। जो कि 2011 में बढ़कर 1,94,671 हो गई है। यवतमाल तालुका में कोलाम आदिवासियों की संख्या सबसे ज्यादा है।

मेरा अध्ययन झरी-जामनी तहसील से 15 किलोमीटर  दूर वाढोनाबंदी व डुमकी पोड पर है। वाढोनाबंदी की कुल आबादी करीब एक हज़ार है। इस गाँव में मुख्य रूप से कुनबी, बंजारा, गोंड, परधान, गोवारी और कोलाम रहते हैं। डुमकी पोड पर केवल कोलाम रहते हैं। जिनकी संख्या करीब एक सौ है। डुमकी पोड पर लगभग 19-20 परिवार हैं। वाढोनाबंदी के

अंतर्गत गाँव से करीब 2 किलोमीटर दूर डुमकी पोड स्थित है। गाँव के कई बुजुर्ग लोगो से बातचीत से ये पता चला कि यहाँ पर करीब 60-70 साल पहले केवल कोलाम समुदाय के लोग ही रहा करते थे, फिर बंजारा समुदाय गाँव में रहने के लिए आ गया। बाद में गोंड, गोवारी, कुनबी भी आ गए। गाँव में कई बंजारा लोगों से बातचीत करने पर पता चला कि उनके दादा या पिता इस गाँव में रहने के लिए आये थे और यहीं बस गए। वाढोनाबंदी गाँव में सबसे पहले बंजारा समुदाय के 60-70 घर हैं। उसके बाद कोलाम समुदाय के 135 घर हैं आगे चलने पर गोंड के 10 घर, गोवारी के 6 घर, कुनबी के 2 घर और परधान के 5 घर हैं। गाँव की जमींन का बड़ा हिस्सा बंजारा समुदाय के पास है और कई बंजारा परिवारों ने सरकारी जमीनो का अतिक्रमण किया हुआ है।

इस गाँव में दसवीं तक का स्कूल है, कक्षा एक से लेकर सात तक जिला परिषद का स्कूल है और कक्षा आठ से दसवीं तक साकेत संस्था का निजी विद्यालय है। जिसमें गाँव के अलावा अगल-बगल के गाँव से भी बच्चे आते हैं।

वाढोना गाँव में दो कुएं हैं। एक कुआँ गाँव की शुरुआत में ही बंजारा समाज के इलाके में है, जिसका इस्तेमाल केवल बंजारा समुदाय ही करता है। इस कुएं से बंजारा समुदाय सिचाई की व्यवस्था करता है। परन्तु पीने के लिए इस पानी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। दूसरा कुआँ गाँव के अंत में है, जिसका उपयोग शेष गाँव के लोगों के द्वारा किया जाता है।

### 1.3 शोध प्रविधि

शोध में मानवविज्ञानी व नारीवादी दृष्टिकोण से प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। मानवविज्ञान में क्षेत्र-कार्य अति महत्वपूर्ण होता है। इसलिए क्षेत्र-कार्य का प्रयोग करते हुये, नारीवादी नज़रिये से वैयक्तिक अध्ययन इस शोध का केंद्र बिन्दु है। जिसमें अवलोकन व साक्षात्कार मुख्य शोध उपकरण हैं। आदिवासी समुदायों में लिखित

इतिहास का लगभग अभाव होता है और कोलामी बोली में अभी तक मुझे एक भी लिखित दस्तावेज नहीं मिल पाया है। इसलिए लोक कथाओं, कहानियों, गीतों आदि से ऐतिहासिक तथ्यों को समझने की कोशिश की गई है।

सैंपलिंग यूनिवर्स से लिए गए लोगों का एक अंश होता है। इस प्रविधि से उन स्थानों और उन लोगों से मिलने की कोशिश की गई है, जिससे विषय से संबंधित समस्या और उसके कारणों को समझा जा सके। सैंपलिंग की महत्वपूर्ण प्रविधि स्नोबॉल का प्रयोग किया गया है। लोगों से बातचीत करते हुये यह जानने का प्रयास किया गया है कि किन-किन स्थानों पर कुमारी माताएँ हैं व उन तक कैसे पहुँचा जा सकता है। मैंने क्षेत्र में जाने से पहले कम से कम 10 कुमारी माताओं का साक्षात्कार लेने की योजना बनाई थी। लेकिन झरी-जामनी जाने के बाद और कई लोगो से बातचीत के बाद यह तय किया कि  वाढोना बंदी नामक गाँव में रहकर ही यह अध्ययन किया जायेगा। वाढोना बंदी गाँव को चुनने का मुख्य कारण यह था कि बाढोना बंदी गाँव में कई अन्य समुदाय रहते हैं जिसमें कोलामों की संख्या सबसे ज्यादा है। साथ इस इस गाँव में बंजारा समुदाय 'एक प्रभुत्वशाली जाति' के रूप में है। यहाँ पर  दो कोलाम परिवारों ने इसाई धर्म को अपना लिया है। इस गाँव से ही सम्बंधित लेकिन दो किलोमीटर की दूरी पर कोलाम पोड़ है। जिससे गाँव व पोड़ में अंतर स्पष्ट रूप से समझा जा सके। इस गाँव में ही आठ कुमारी माता होने की बात मालूम पड़ी थी। इस गाँव में अध्ययन करने का यह सबसे महत्वपूर्ण कारण था। आठ कुमारी माताओं में से मेरा साक्षात्कार चार महिलाओं से हुआ। बाकी की महिलाएं गाँव में नहीं रह रही थीं। पहली बार गाँव जाने पर 12 दिन रुकना हुआ, जिसमें से सिर्फ दो कुमारी माताओं से बात हो पाई। बाकी दो मिलने में आनाकानी कर रहीं थीं। एक कुमारी माता के पिता इस बात के लिए बिलकुल भी राजी नहीं थे कि मैं उससे बात करूं। अपने दूसरे दौरे में काफी प्रयास के बाद उनसे बात हुई। लेकिन अन्य जगहों पर मुख्य समस्या कुमारी माताओं से बातचीत करने में ही हुयी। इस गाँव के

अलावा अन्य स्थानों पर इन महिलाओं से बातचीत नहीं हो पाई, क्योंकि कुमारी माता कहे जाने से महिलाएँ बहुत गुस्से में थीं। निमनी नामक गाँव में एक कुमारी माता से बात करने गई तो वह बहुत क्रोधित हुयी। माथार्जुन गाँव में भी दो कुमारी माताओं ने मिलने से इनकार कर दिया।

कोलाम समुदाय की महिलाओं व पुरुषों से सामूहिक व साक्षात्कार के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि उनके समाज में किस तरह के बदलाव हो रहे हैं जिन्हें वे समझ रहे हैं। इस बदलावों को वे किस रूप में ले रहे हैं। इस क्षेत्र में कार्यरत कुछ सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों से बातचीत करने का प्रयास किया गया जो कि कुमारी माता परिघटना को संज्ञान में लेते हुए काम कर रहे हैं। लेकिन कुछ लोगों से अनौपचारिक रूप से बातचीत हुई, परन्तु औपचारिक रूप से किसी से भी बात नहीं हो पाई।

इस शोध के लिए नागपुर स्थित भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (anthropological survey of india), नागपुर यूनिवर्सिटी और ICPR के पुस्तकालय में उपस्थित विषय से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

शोध का स्वरूप गुणात्मक है क्योंकि इसमें लोगों के अनुभव व नजरिये को जानने का प्रयत्न किया गया है व  जिसकी सहायता से शोध के विषय को व्याख्यायित किया गया है।

शोध को और बेहतर करने के लिए अन्य प्रविधियों जैसे छाया-चित्रण, ऑडियो रिकॉर्डिंग व वीडियो रिकॉर्डिंग का उपयोग किया गया है।

मैंने कई चर्चाओं के बाद अपने मुख्य सूचनादाता के रूप में सूर्यभान बापुराव मडावी और रामराव आत्राम को चुना है। मैंने यह तय किया था कि मेरे सूचनादाता की उम्र करीब 50 के आस-पास हो और जो गाँव में रहते हों। जिसके कारण कोलाम समाज में बदलाव को कम से कम दो पीढ़ियों के स्तर पर समझा जा सके। मेरे दोनों ही सूचनादाता इसाई धर्म अपना चुके

थे, उनका अपने ही समाज को देखने का नजरिया थोडा आलोचनात्मक भी था। इसलिए उन्होंने रीति-रिवाजों को बारीकी से बताया व समझाया।

मेरे अध्ययन का मुख्य आधार कोलाम जनजाति में हो रहे परिवर्तन, हिन्दूकरण व महिलाओं की बदलती स्थितियों का दस्तावेजीकरण करना है।

## 1.4 शोध प्रश्न

पिछले कुछ सालों से कोलाम जनजाति में कुमारी माता की परिघटना सामने आयी है। जिस विशेष धारणा के साथ कुमारी माता का नाम दिया गया है, वह धारणा इनकी अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की न होकर, किसी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक धारणा की है। यह देखना महत्वपूर्ण है कि कुमारी माता की परिघटना उसी हिन्दूकरण व संस्कृतिकरण का प्रमुख लक्षण है, जिसके जरिये वो अपनी संस्कृति से विस्थापित हो रहे हैं या इनके कुछ और अंतर्निहित कारण हैं।

- कोलाम जनजाति में हिन्दूकरण व संस्कृतिकरण की प्रक्रिया व प्रभाव क्या हैं?
- कोलाम समुदाय में सामाजिक बदलाव का महिलाओं पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है?
- कोलाम जनजाति में 'कुमारी माता' की परिघटना के कारण क्या हैं?

## 1.5 शोध उद्देश्य

- कोलाम समाज की आर्थिक व्यवस्था में बदलाव के प्रभाव को समझना।
- कोलाम समाज में सांस्कृतिक व धार्मिक विश्वासों पर हिन्दूकरण के प्रभाव को समझना।

- कोलाम महिलाओं पर हिन्दूकरण का प्रभाव और 'कुमारी माता' के संघर्ष व जीवनयापन का अध्ययन।

## 1.6 अध्याय विभाजन

शोध विषय के आधार पर अध्यायों को पांच भागों में बांटा गया हैं, उससे पहले भूमिका में पुरे शोध का परिचय देते हुए साहित्य पुनरावलोकन किया गया है उसके बाद शोध प्रश्न, शोध के उद्देश्य, अध्ययन क्षेत्र का परिचय, शोध प्रविधि तथा शोध की सीमाओं पर चर्चा की गई हैं।

पहला अध्याय– **कोलाम जनजाति एक परिचय** हैं जिसमें बहुत ही संक्षेप में कोलाम जनजाति के सामाजिक संरचना, रीती-रिवाज़, त्यौहार, धार्मिक विश्वास, राजनैतिक संस्था तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं का परिचय दिया गया है।

दूसरा अध्याय- **कोलाम जनजाति में सामाजिक रूपांतरण: विविध आयाम** है। इस अध्याय में कोलाम समाज में हो रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक बदलाओं पर विस्तृत चर्चा की गई हैं। जिसमें स्त्री-पुरुष संबंधों में हो रहे परिवर्तन के कारणों के देखने की कोशिश की गई हैं। स्कूल व आश्रम शाला की भूमिका, जनसंचार माध्यमों व हिन्दूकरण और संस्कृतिकरण के प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया हैं।

तीसरा अध्याय- **कोलाम जनजाति में सामाजिक रूपांतरण का महिलाओं पर प्रभाव** है इस अध्याय में कोलाम महिलाओं पर पड़ रहे प्रभावों को संपत्ति के अधिकार में कमी, श्रम विभाजन में परिवर्तन एवं गतिशीलता, दहेज में वृद्धि, वधू मूल्य की समाप्ति, विवाह पर पारिवारिक नियंत्रण में वृद्धि, तलाक़ में कमी आदि के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया हैं। इसी अध्याय में कुमारी का माता नामक परिघटना के बारे में एक छोटा परिचय दिया गया हैं।

चौथा अध्याय- **कोलाम जनजाति में कुमारी माता परिघटना: केस स्टडी** है। जिसमें चार कुमारी माताओं से साक्षात्कार के आधार पर उनके जीवन का वर्णन किया गया है।

पाचवां अध्याय- **कुमारी माता बनने के प्रमुख कारण एवं जीवन संघर्ष** है इस अध्याय में कोलाम समाज में कुमारी माताओं के बनने के कारणों पर बातचीत की गई हैं। कुमारी माता के रूप में पहचान के बाद उनके जीवन में किस तरह के बदलाव आते हैं तथा अपना जीवन को वो कैसे देखती हैं , कैसे जीती है ,उनके सामाजिक संघर्ष क्या है आदि को जानने की कोशिश की गई हैं।

अंत में सभी अध्यायों को मिलाकर उनका निष्कर्ष लिखा गया हैं। उसके बाद परिशिष्ट व संदर्भ ग्रन्थ की सूची दी गई है।

## 1.7 शोध की सीमाएं

शोध से संबंधित प्रमुख सीमा कोलाम जनजाति पर उपलब्ध सीमित अध्ययन की रही, साथ ही भाषा की समस्या थी। कोलामी बोली से अपरिचित होने के चलते, मैं हिन्दी में ही बात कर पाई। जिसके चलते बुजुर्ग महिलाओं से बातचीत में असुविधा हुई। मेरा अध्ययन क्षेत्र पहाड़ी इलाके में था, जहाँ यातायात की सुविधा न होने के चलते किसी न किसी से यातायात के लिए सहायता लेनी पड़ती थी, जिसके कारण कई स्थानों पर जाना नहीं हो पाया। शोध की मुख्य सीमा 'कुमारी माताओं' से सीमित बातचीत रही है। अपनी तरफ से पूरी कोशिश करने के बावजूद केवल चार कुमारी माताओं से ही बातचीत हो पाई। यह भी इसलिए संभव हो पाया, क्योंकि एक ही गाँव में रहते हुए लगातार मिलने की कोशिश की गई। शोध की सीमाओं में सीमित आर्थिक संसाधन भी एक प्रमुख कारण है। जिसके चलते बार-बार इस इलाके में जाना संभव नहीं हो पाया। सीमित आर्थिक संसाधन के चलते ही कुछ

महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में भी जाना नहीं हो पाया। इन सीमाओं में ही शोध को महत्वपूर्ण बनाने की कोशिश की गई है।

## 1.8 क्षेत्र अनुभव (आत्मभिज्ञान)

शोध से संबंधित क्षेत्र झरी-जामनी में तमाम तरह के अनुभव हुए। क्षेत्र में लोगो से इतनी सहायता मिली और लोगो से अच्छी तरह से बातचीत हुई कि बार-बार ऐसा लग रहा था कि इस विषय पर भविष्य में भी काम करना चाहिए। लेकिन मेरे शोध विषय के केंद्र बिंदु कुमारी माताओं से बातचीत करने में जिस तरह के अनुभव हुए, उसमें लग रहा था कि इस विषय पर अब आगे मैं कोई काम नहीं करुँगी। ऐसा इसलिए लग रहा था कि इन महिलाओं को वैसे भी अपने गाँव-समाज में हाशिये की जिन्दगी जीनी पड़ती हैं। ऐसे में मेरे द्वारा उस गाँव में जाकर उनसे बात करना उनकी स्थिति को और भी खराब बना रहा था। मैं उस गाँव में कुछ दिन रही भी और गाँव के लोगो से अच्छे सम्बन्ध भी बने, परन्तु मेरी पहचान एक बाहरी व्यक्ति के रूप में ही रही। खासकर जब भी मैं कुमारी माताओं से मिलने का प्रयास करती थी, लोगो की चेतना में स्वतः ये बात आ जाती थी कि मैं कुमारी माताओं से बात करने ही आयी हूँ। मैंने गाँव में यह स्पष्ट रूप से कहा था कि मैं कोलाम समाज और उनमें व्याप्त समस्याओं पर शोध कर रही हूँ और इसी क्रम में मैं रोज शाम को किसी न किसी कोलाम परिवार के घर में घंटों बैठकर बातचीत करती थी ताकि किसी दिन मैं कुमारी माताओं से बात करूं तो किसी को कोई आपत्ति न हो। एक शाम जब मैं एक महिला के घर पर बात करने गई तो उसने अपनी जिंदगी में जो कुछ हुआ, उसको विस्तार से बताया और उसने रात का खाना वहीं खाने के लिए कहा। लेकिन बगल के घर से दो तीन बार एक महिला आकर उससे कुछ कह के चली जा रही थी। उसने बताया कि घर के अगल बगल के लोग बहुत गुस्सा कर रहे हैं कि मैं उससे क्यों मिलने आई हूँ। उसने यह भी कहा कि जब से मैं गाँव में आई हूँ। तभी से लोग गाँव की कुमारी माताओं को कह रहे हैं कि उनकी वजह से गाँव की इतनी बदनामी हो चुकी है कि

अब बाहर के लोग भी आ रहे हैं। लगभग सभी कुमारी माताओं से बात करने में बहुत समस्या का सामना करना पड़ा। इस गाँव में सबसे कम उम्र की एक कुमारी माता से बातचीत के दौरान और बाद में भी मैं यह लगातार सोच रही थी कि इस लड़की का जिक्र मैं करू या नहीं। क्योंकि मेरे माध्यम से उसकी स्थिति सार्वजनिक हो जाने की एक सम्भावना होती और उसके पिता ने मुझसे अपना डर पहले ही व्यक्त कर दिया था कि वह इसकी शादी कर देंगे। लेकिन एक बार बदनामी हो जाएगी तो शादी में मुश्किल हो जाएगी। इसी तरह गाँव से सात किलोमीटर दूर एक गाँव निमनी में जब एक कुमारी माता से बात करने गयी तो वह एकदम से गुस्से में आ गई और कहने लगी कि ' *क्या कुमारी माता, कुमारी माता लगा रखा हैं मैं कोई कुमारी माता नहीं हूँ, जाओ अपना काम करो मुझे कोई बात नहीं करनी हैं*'। ये महिलाएं कुमारी माताएं कहे जाने से बहुत खिन्न हैं। ऊपर से मेरे द्वारा उनसे बात करना उनके गुस्से को और बढ़ा रहा था। फिर भी कुछ महिलाओं से मेरे अच्छे सम्बन्ध बने और उन्होंने अपने बारे में विस्तार से बताया, जिसका वर्णन अध्याय चार में किया गया है। इनकी तरह, मैं खुद इनको 'कुमारी माता' नहीं बल्कि एक नागरिक मानती हूँ।